झलकियाँ

श्री निजानन्द आश्रम इन्चोली के बीसवें वार्षिकोत्सव पर पधारे माननीय श्री हरिकिशन लाल जी भगत, सूचना प्रसारण मन्त्री भारत सरकार ने कहा।

मैं कई वर्ष पहले भी इस आश्रम में दो-तीन वार आ चुका हूँ। उस समय यहाँ ऊँचे टीले पर प्रारम्भ में एक झोपड़ी में मन्दिर बना हुआ था और फिर एक छोटे से कमरे में मन्दिर बना- इधर कुछ ही वर्षों में भाई जगदीश चन्द्र के प्रयासों से बहुत विस्तार व प्रगति हुई है इस आश्रम की जिसे देखकर मैं बहुत प्रसन्न हूँ।

●

महाराज श्री रामरतन दास जी की मुझ पर अपार कृपा थी। यद्यपि मैं उनके निकट बहुत कम रहता था और बहुत कम बोलता था पर यह मेरे लिए सौभाग्य की बात थी कि महाराज जी का मेहर भरा आशीर्वाद मुझे सदैव प्राप्त रहा। चूँकि मैं तो उनके दर्शनों मात्र को ही कभी-कभी आया करता था सो मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता था कि मेरा स्वागत सत्कार किया जाय। इसी उद्देश्य से एक बार मैं बिना किसी को सूचना दिये अचानक देहली से यहाँ आया तो यह देखकर हैरानी हुई कि सड़क पर कुछ लोग फूल मालायें लिए खड़े थे। जब मैंने उन से कहा भई आप यहाँ किस के लिए खड़े हो, मैंने तो अपने आने की खबर किसी को नहीं दी तो वह विनम्र होकर बोले··· हमें महाराज जी ने कहा है कि भगत जी आ रहे हैं जाओ उन्हें लिवा लाओ·····सो ऐसी थी दिव्य दृष्टि मेरे सतगुरु की।

●

श्री नकली सिंह जी एम० एल० ए, उत्तर प्रदेश ने कहा।

देश के अलग-अलग प्रान्तों से आये हुए लोगों को यहाँ देख मुझे एक छोटे भारत के सुन्दर स्वरूप का नजारा नजर आ रहा हैं। मैं इस से पहले भी यहाँ आ चुका हूँ--मुझे यहाँ धर्म व अनुशासन का समन्वय देखकर बहुत खुशी होती है। यद्यपि मेरा जीवन राजनीति से जुड़ा हुआ है पर मैं धार्मिक सेवा के लिए सदा समर्पित हूँ और इस आश्रम के लिए एवं श्री प्राणनाथ जूनियर हाई स्कूल की प्रगति के लिए मेरी पूरी सेवायें सदा उपलब्ध रहेंगी।

●

Nijanand App

श्री के० जो० भगत, एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट, महामन्त्री अखिल भारतीय प्रणामी परिषद ने कहा

●

यह मेरा दुर्भाग्य रहा कि मैं ऐसे सुन्दर समागम के आनन्द से अभी तक वंचित रहा--मैं सोचता हूँ कि इस से पहले यहाँ क्यों नहीं आया ।

श्री निजानन्द आश्रम अत्यन्त प्राकृतिक एवं रमणीक स्थान है और यहाँ का अनुशासन एवं एकमयता देख कर मैं व मेरे साथी बहुत प्रभावित हुए हैं । यह स्थान तो हमारे समाज का एक शक्तिशाली केन्द्र बनने की क्षमता रखता है ।

●

गुजरात से पधारे हुये सुन्दर साथ जब श्री पदमावती पुरी की यात्रा पर आश्रम से विदा होने लगे तो पुरुषों व महिला सुन्दर साथ ने उस माटी पर लेट-लेट कर दण्डवत प्रणाम किया और माथे पर उस माटी का तिलक लगाया--इतना भावपूर्ण और प्रेम मई दृष्य देख कर बहुत सुन्दर साथ खुशी के आँसू बहाते देखे गये ।

●

श्री मेहर सागर दण्डवत परिक्रमा स्वयं में बहुत कठिन साधना है--इस पर भी वयोवृद्ध महिला एवं पुरुष सुन्दर साथ ने भी जिस बड़ी संख्या में दण्डवत परिक्रमा में भाग लिया वह दृष्य सुन्दर साथ की धार्मिक श्रद्धा का ज्वलन्त प्रमाण है । कुछ ऐसे सुन्दर साथ भी इस वर्ष पहली बार पधारे थे जो अपने घरों में एक बर्तन भी इधर से उधर उठाकर नहीं करते परन्तु आश्रम में बाल्टियां हाथों में लिये दौड़ दौड़ कर सेवा करते देखे गये ।

✺

सात सात वर्ष की दो छोटी बालिकाओं मनीषा एवं प्रीति सेतिया जयपुर ने अत्यन्त मन-भावन नृत्य का प्रदर्शन किया । श्रीमती अनीता खुराना एवं श्रीमती स्वर्ण अहूजा ने चौथी भोम की निरत--जब करती है नवरंग नाच--साथ में मृदंग बाजे साज--कि घुंघरू खनक उठे, को ऐसी प्यारी धुन में इस नृत्य को सजाया कि सुन्दर साथ की बार-बार माँग करने पर मंच-मन्त्री को अन्य कार्य-क्रमों में परिवर्तन कर इस नृत्य को हर मंच पर दिखाना पड़ा--इस दृष्य ने एक अत्यन्त रोमांचक मोड़ उस समय लिया जब माननीय श्री हरकिशन लाल जी भगत, सूचना एवं प्रसारण मन्त्री के सामने इस नृत्य को आरम्भ करते ही इन बालकाओं ने नृत्य मुद्रा में ही श्री भगत जी को मंच पर प्रणाम किया--मुगध हो उठा वा सारा सुन्दर साथ एवं माननीय भगत जी और उनकी जीवन अंगना श्रीमती आशा भगत भी ।

दिनांक १--१०--८४ को सूचना एवं प्रसारण मन्त्री श्री एच० के० एल० भगत के आगमन पर अनेक प्रेस रिपोर्टर भी पधारे--अन्य समाचार पत्रों के साथ मुजफ्फर नगर से प्रकाशित होने वाले "दैनिक देहात" ने मुख्य पृष्ठ पर मोटी सुर्खियों में सविस्तार समाचार छापा

Nijanand App

इन्चोली आश्रम के समस्त कार्यक्रम यद्यपि ट्रस्ट की बैठकों में पूर्ण सोच विचार व योजना से बनाये जाते हैं फिर भी कहीं न कहीं किसी कमजोरी या त्रुटि के रहने की सम्भावना से इंकार नहीं किया जा सकता । आश्रम में आने वाले सुन्दर साथ हर निर्णय को यों ही स्वीकार नहीं कर लेते वरण जहां भी कोई निर्णय उनके विचारों से मेल नहीं खाता उस पर वे अपनी तीव्र प्रतिक्रिया भी व्यक्त करते हैं । यह सशक्त जागरूकता ही किसी समाज की संगठन शक्ति की प्रहरी मानी जाती हैं--केवल हाथ उठा कर प्रत्येक निर्णय को स्वीकार करने वाले लोग समाज को कमजोर करने का कारण बना करते हैं । यह बात उस समय खुलकर सामने आई जब संगीत प्रतियोगिता में "किरन्तन" और "वाणी अन्ताक्षरी" के ज्योरी के निर्णय का अनेक सुन्दर साथ काफी विरोध करते देखे गये ।

दिनांक ३०-१-८४ से ३-१०-८४ तक के सारे कार्यक्रम की वीडियो कैसेट तैय्यार की गई है ।

भजन

चन्द्रप्रकाश सुखीजा

सौतन — शायद मेरी शादी का ख्याल

शायद अपनी अंगना का ख्याल दिल में आया है
इसीलिये पिया प्यारे ने, हमें आन जगाया है,
वो ही अकेले आये नहीं हैं, वाणी भी लाए हैं
इसीलिए अंगनाओं ने मिल जय जय कारा लगाया है शायद···
कोई गाता कोई सुनाता, मुझको नजर आए २
जिधर भी देखूँ, वाणी की चर्चा, यही समझ में आए
मुझ पर भी मेहर, करना पिया जी, मैं भी वाणी गाऊं
कही तेरी, वाणी से पिया जी, रह ही न जाऊँ,
तेरी ये अंगनाएँ, तेरी ही वाणी गायें,
आने जाने वालों को, गा के ये सुनाएँ,
लगता है बिन माँगे ही सब कुछ पिया से पाया है
इसलिए···
में तेरी सेवा ना जानू, औ पिया प्यारे
क्या करूं मुझे वाणी तेरी, खींच यहाँ लाई
गा रही थी जानें कितनी, अंगना वाणी तेरी
यही सोचकर आई पिया जी इच्छा होगी पूरी
ये जग मुझको पिया एक सपना लगता है,
एक तेरा दर ही बस अपना लगता है,
शरण आई अंगना को पिया नें गले लगाया है
इसीलिये अंगनाओ मिल···

Nijanand App